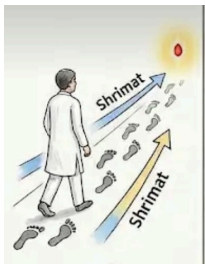




30-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - तुम्हें योगबल से रावण दुश्मन पर जीत पानी है, मनुष्य से देवता बनने के लिए दैवीगुण धारण करने हैं"



प्रश्न:- सभी बच्चे बाप की श्रीमत पर एक जैसा नहीं चलते हैं - क्यों?

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यत्नं सिद्ध्यते।
यत्तमपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥
हजारों मनुष्यों में कोई एक मेरी प्राणिके लिये
यत्न करता है और उन यत्न करनेवाले योगियों में
भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझको तत्त्वसे
अर्थात् यथार्थरूपसे जानता है ॥ ३ ॥

उत्तर:- क्योंकि बाप जो है, उसको सभी ने एक जैसा

पहचाना नहीं है। जब पूरा पहचानेंगे तब श्रीमत पर

चलेंगे। 2- माया दुश्मन श्रीमत पर चलने से रोक

लेती है इसलिए बच्चे बीच-बीच में अपनी मत चला

देते हैं। फिर कहते बाबा माया के तूफान आते हैं,

आपकी याद भूल जाती है। बाबा कहते बच्चे -

रावण माया से डरो मत। जोर से पुरुषार्थ करो तो

वह थक जायेगी।

गीत:- न वह हमसे जुदा होंगे...

Click



ना वो हमसे जुदा होंगे ना वो हमसे जुदा होंगे
ना उल्फत दिल से हाय दिल से निकलेगी ना दिल से निकलेगी
लगी हैं आस जो दिल में बड़ी मुश्किल से निकलेगी
बड़ी मुश्किल से निकलेगी उन्हीं के थे उन्हीं के हैं
उन्हीं पर मर मिटेंगे हम उन्हीं पर मर मिटेंगे हम
बहुत पछतायेंगे जालिम ज़माना हमको देकर गम
ज़माना हमको देकर गम सितम जितने भी हैं सब
खाक में मिल जायेंगे उस दम मोहब्बत बनकर जब हमारे
दिल से निकलेंगे हमारे दिल से निकलेंगे ना वो हमसे जुदा होंगे
ना उल्फत दिल से हाय दिल से निकलेगी ना उल्फत दिल से निकलेगी

जिगर हैं टुकड़े टुकड़े गम ने ऐसा तीर मारा हैं
गम ने ऐसा तीर मारा हैं अरे ओ दिल के मालिक
दिल को अब तेरा सहारा हैं दिल को अब तेरा सहारा हैं
हमें बर्बादियों का गम नहीं
अगर तू हमारा हैं तेरा ही नाम लेगी जो
सदा इस दिल से निकलेगी सदा इस दिल से निकलेगी
ना वो हमसे जुदा होंगे ना वो हमसे जुदा होंगे
ना उल्फत दिल से हाय दिल से निकलेगी ना उल्फत दिल से निकलेगी

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा

30-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ओम् शान्ति। तुम सिंगल आत्मा हो। हर एक कहेंगे ओम् शान्ति। यह डबल है इनको दो बार कहना पड़े

- ओम् शान्ति, ओम् शान्ति। अब बाप बैठ बच्चों को

समझाते हैं - **Attention..!** तुम यहाँ युद्ध के मैदान में बैठे हो। ऐसे

नहीं कि जैसे वो लोग आपस में लड़ते हैं। ऐसे तो घर

- घर में लड़ते-झगड़ते रहते हैं। मैजारिटी की बात की

जाती है। नम्बरवन है देह-अभिमान, सेकेण्ड है

काम। अभी तुम याद के बल से 5 विकारों रूपी

रावण पर जीत पाते हो। याद का बल है तो तुम

गिरेंगे नहीं। तुम्हारी एक रावण से ही युद्ध है। वहाँ तो

अनेक प्रकार की बातें होती हैं। यहाँ एक ही बात है।

तुम्हारी युद्ध है ही रावण के साथ। तुमको सिखलाने

वाला कौन है? पतित-पावन भगवान। वह है ही

पतित से पावन बनाने वाला। पावन अर्थात् देवता,

तुम विश्व के मालिक बनते हो। यह कोई मनुष्य

समझते नहीं कि रावण द्वारा तुम पतित बने हो। बाप

ने समझाया है इस समय सारी दुनिया में रावण का

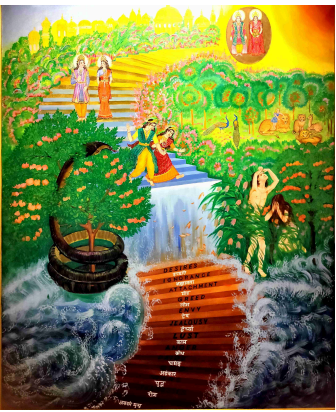
राज्य है। वैसे रामराज्य होता है सतयुग, त्रेता में। तो

भी सारी दुनिया में कहेंगे। परन्तु वहाँ इतने मनुष्य

नहीं होते। तुम विश्व का राज्य ले रहे हो योगबल से।

ऐसे भी नहीं यहाँ बैठते हो तब ही बाप को याद

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा



करना है वा स्वदर्शन चक्र फिराना है, बस। यह तो

^{constantly} हर वक्त बुद्धि में रहना चाहिए। हमने स्वर्ग में आधाकल्प राज्य किया फिर रावण का श्राप मिलने से उतरते हैं। उतरने में टाइम तो लगता है। 84 पौढ़ी

(सीढ़ी) उतरनी पड़ती है। चढ़ती कला में पौढ़ियाँ तो हैं नहीं, अगर पौढ़ियाँ हों तो सेकेण्ड में जीवन-मुक्ति कैसे कहा जाए? कहाँ तुमको 2500 वर्ष उतरने में लगते हैं और कहाँ तुम थोड़े ही वर्षों में चढ़ती कला में आ जाते हो। तुम्हारा है योगबल। उनका है

बाहुबल। द्वापर से लेकर उतरते हैं फिर बाहुबल शुरू होता है। सतयुग में मारने की बात हो नहीं सकती।



श्रीकृष्ण के लिए जो दिखाया है ओखली से बांधा। ऐसी कोई बात हो नहीं सकती। वहाँ बच्चा कभी

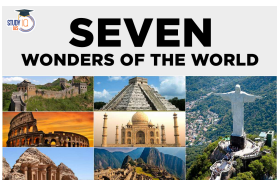
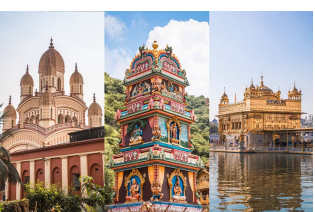


चंचल होता नहीं। वह तो सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण होता है। श्रीकृष्ण को कितना याद करते आते हैं। अच्छी चीज़ की याद आती है ना। जैसे

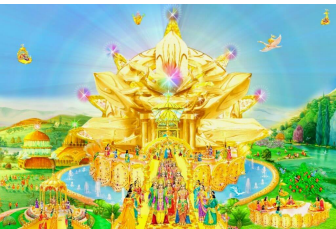
दुनिया में 7 वन्डर्स हैं तो मनुष्यों को याद आते हैं, देखने जाते हैं। आबू में अच्छे ते अच्छी क्या चीज़ है,

जो मनुष्य देखने आते हैं? रिलीजस आदमी तो आते

ही हैं मन्दिर देखने। भक्ति मार्ग में तो मन्दिर बहुत होते हैं। सतयुग त्रेता में कोई मन्दिर होता नहीं।



30-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



मन्दिर बाद में बनते हैं, यादगार के लिए। सतयुग में त्योहार आदि कोई होते नहीं। दीपावली भी ऐसे नहीं होती। हाँ, तख्त पर बैठते हैं तो कारोनेशन डे मनाते हैं। वहाँ तो ज्योत सबकी जगी हुई होती है।



तुम्हारे पास एक गीत भी है नवयुग आया... यह सिर्फ तुमको पता है हम नवयुग अर्थात् सतयुग के लिए, देवी-देवता बनने के लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। पढ़ाई तो पूरी रीति पढ़नी चाहिए। जहाँ जीना है ज्ञान अमृत पीना है। यह नॉलेज है सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानना है। इसमें कोई भाषा आदि नहीं सीखी जाती है। सिर्फ बाप को याद करना है और स्वदर्शन चक्र फिराना है, बस। यहाँ तुम बैठे हो। स्वदर्शन चक्रधारी हो। बुद्धि में है - हमारा 84 जन्मों का चक्र पूरा हुआ। अब पुराना शरीर, पुराना सम्बन्ध छोड़कर नया लेना है। विष्णुपुरी का मालिक बनने के लिए बाबा पुरुषार्थ करा रहे हैं। दुनिया में और सब हैं आसुरी सम्प्रदाय। भगवानुवाच - यह वही गीता का युग चल रहा है। यह है कल्प-कल्प का



Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा



30-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

संगमयुग। बाप कहते हैं⁶ - मैं इस कल्प के संगमयुग

पर आता हूँ। मैं वही गीता का भगवान हूँ। यहाँ आता हूँ नई दुनिया स्वर्ग रचने, मैं द्वापर में कैसे आऊंगा।⁹

यह एक बड़ी भूल है। कोई छोटी कोई बड़ी भूल

होती है। यह बड़े ते बड़ी भूल है। शिव भगवान जो

पुनर्जन्म रहित है, उनके बदले 84 जन्म लेने वाले

का नाम लिख दिया है। तुम अभी जानते हो कि

श्रीकृष्ण तो ऐसे कह न सके कि मामेकम् याद करो।

सब धर्म वाले थोड़ेही उनको मानेंगे। शिव तो

निराकार है। तुम शिव शक्ति सेना हो। शिवबाबा के

साथ योग लगाकर शक्ति लेते हो। इसमें मेल-फीमेल

की बात नहीं। तुम आत्मायें सब ब्रदर्स हो। सभी बाप

से शक्ति ले रहे हो। वर्सा बाप ही देगा ना। वह बाप

ही सर्वशक्तिमान् है। इन लक्ष्मी-नारायण को भी

कहेंगे सर्वशक्तिमान् क्योंकि सारे विश्व के मालिक हैं।

उन्होंने यह राज्य कैसे पाया? अभी भारत तो क्या

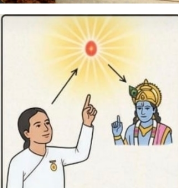
सारी दुनिया में रावण राज्य है। कोई राजायें होते हैं

तो मालूम होता है, उनके बड़ों ने यह राजाई की है,

जो चलती आती है। यह तो सतयुग आदि से चले हैं

तो जरूर आगे जन्म में ऐसा पुरुषार्थ किया होगा।

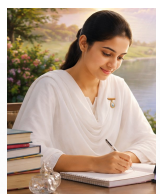
पतित राजाई मिलती है दान-पुण्य करने से। यहाँ तो



Multi Trillion dollar Question..



Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा



30-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

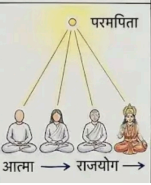
इस संगम पर **ज्ञान** और **योगबल** से 21 जन्म के लिए राज्य पाते हो।

तुम जानते हो यह पुरानी दुनिया सारी विनाश होनी है। यह देह भी नहीं रहेगी, इसलिए अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। बाबा-बाबा कहना सीखो। जैसे जिस्मानी बच्चों को सिखाया जाता है तो वह उसी बाप को याद करते हैं। अभी रूहानी बाप तुम बच्चों को कहते हैं हे बच्चे, यह नई बात है। बाप कहते हैं अब मुझ रूहानी बाप को याद करो क्योंकि वापिस घर चलना है। आत्मा तो अविनाशी है, शरीर विनाशी है तो ताकत वाला कौन ठहरा?

शरीर आत्मा के आधार पर चलता है। आत्मा चली जाती है तो शरीर को आग में जलाना पड़ता है। आत्मा तो है ही अविनाशी। वह बिन्दी की बिन्दी ही है। उस आत्मा को कोई भी नहीं जानते हैं। भल करके कोई को साक्षात्कार होता है फिर भी क्या!

उनको तो यह पता ही नहीं है कि आत्मा जो बिन्दी है, उनमें 84 जन्मों का अविनाशी पार्ट भरा हुआ है। यह

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा

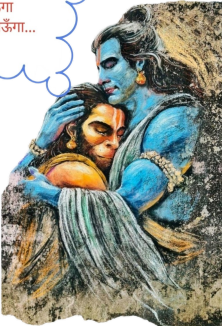
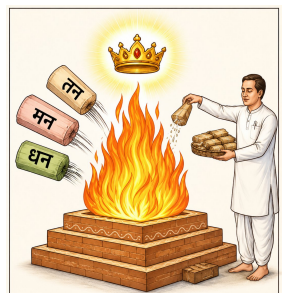


बातें तुम्हारी ही बुद्धि में हैं। राजयोग सिखलाने वाला है ही वह बाप। बाकी बैरिस्टर, वकील, इन्जीनियर आदि तो चले आते हैं। यहाँ बनना है मनुष्य से देवता। हैं वह भी मनुष्य परन्तु उनको देवता कहा जाता है। देवता अर्थात् दैवी गुण धारण करने वाले। तुमको पुरुषार्थ कर ऐसा दैवीगुणों वाला बनना है। यह है एम ऑब्जेक्ट। तुम जानते हो इन देवताओं में कौन से गुण हैं। ऐसा हमको बनना है। प्रजा भी होगी ना। प्रजा ढेर की ढेर बनती है। बाकी राजा-रानी बनने में मेहनत लगती है। जो मेहनत बहुत करेंगे वह राजा-रानी बनेंगे। जो बहुतों को नॉलेज देंगे, वह हर एक अपनी दिल से समझ सकते हैं। आत्मा कहती है - हम बेहद बाप का बन ही जाऊंगा। उन पर वारी जाऊंगा, कुर्बान जाऊंगा। जो कुछ मेरे पास है सब वारी जाऊंगा। ईश्वर को तो देते हैं ना। आप आयेंगे तो हम कुर्बान जायेंगे। उसके बदले आपसे नया तन-मन-धन लेंगे। मन नया कैसे लेंगे? आत्मा को नया (पवित्र) बनायेंगे। फिर शरीर भी नया लेंगे। राजधानी भी लेंगे। अब तुम ले रहे हो ना। आत्मा कहती है हे बाबा इस शरीर सहित आपकी हूँ। बाबा हम आपकी शरण आता हूँ। सब रावण राज्य में बहुत दुःखी हुए



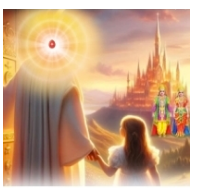
तेरे लिए मैं जहाँ से टकराऊँगा
सब कुछ खोके तुझको ही पाऊँगा
दिल बन के मैं दिल धडकाऊँगा
मैं तेरा बन जाऊँगा

सोह तेरी मैं कसम यही खाऊँगा
किन्हे वादेया नू उमरों निभाऊँगा
तुझे हर वारी (हर कल्प में)
अपणा बनाऊँगा
मैं तेरा बन जाऊँगा...





30-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा"



हैं इसलिए बाबा अब इससे लिबरेट कर अपनी राजधानी में ले चलो। शिवबाबा तो मिल गया तो

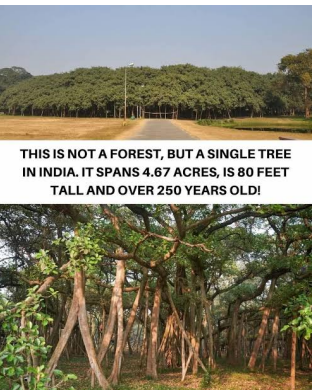
बाकी क्या! तुम जानते हो कि शिवबाबा की श्रीमत

से स्वर्ग बनता है। आसुरी रावण की मत से नर्क बनता है। अब फिर से स्वर्ग बनना है, श्रीमत से।

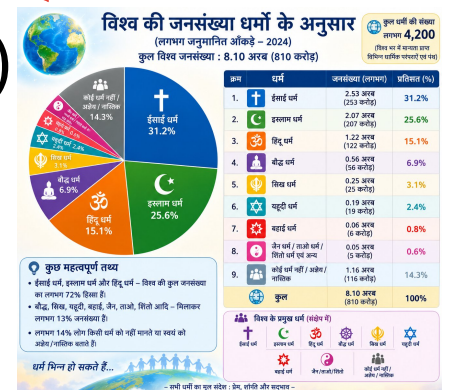
जरूर जो कल्प पहले आये होंगे वही आयेंगे। श्रीमत से ऊंच बनेंगे। रावण मत पर चलने से गिर पड़ेंगे।

तुम्हारी अब होती है चढ़ती कला, बाकी सबकी उतरती कला है। कितने अनेक धर्म हैं। सतयुग में

एक देवी-देवता धर्म ही था। अब वह प्रायः लोप हो गया है। (बड़ के झाड़ का मिसाल)



THIS IS NOT A FOREST, BUT A SINGLE TREE IN INDIA. IT SPANS 4.67 ACRES, IS 80 FEET TALL AND OVER 250 YEARS OLD!

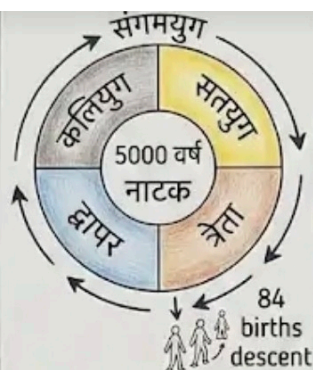


तुम जानते हो देवी-देवता धर्म की निशानियाँ तो हैं। बरोबर देवी-देवताओं का राज्य था। 5 हजार वर्ष की

बात है। तुम सिद्ध कर बतलाते हो यह 5 हजार वर्ष

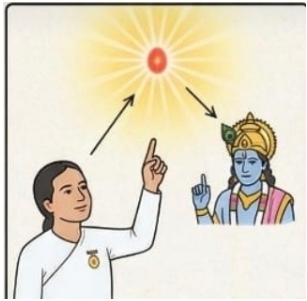
का चक्र है। इसमें 4 युग हैं। हर एक युग की आयु 1250 वर्ष है। उन्होंने तो लाखों वर्ष लगा दिये हैं।

बहुत फर्क होने के कारण किसकी बुद्धि में बैठता नहीं है। समझते हैं जैसे और-और संस्थायें हैं वैसे यह



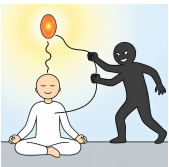
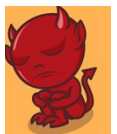
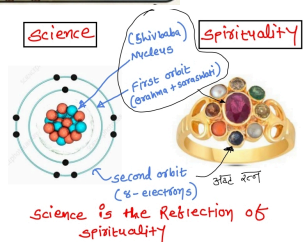
Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा

30-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



भी बी.के. की संस्था है। यह गीता को उठाते हैं। अब गीता तो श्रीकृष्ण भगवान ने गाई। यह दादा तो जवाहरी बैठा है, तो मनुष्य मूँझेंगे ना। बाप कहते हैं मैं जो हूँ, जैसा हूँ, इस समय तक कोई ने मुझे जाना नहीं है। पिछाड़ी में तुम पूरी रीति जानेंगे। अभी तक नम्बरवार जाना है, तब तो श्रीमत पर चलना बड़ा मुश्किल समझते हैं। अच्छे-अच्छे बच्चे भी श्रीमत पर नहीं चलते। रावण चलने नहीं देता। अपनी मत चला देते हैं। थोड़े हैं जो श्रीमत पर पूरा चलने वाले हैं। आगे चल पूरा पहचानेंगे तब श्रीमत पर चलेंगे। मैं जो हूँ, जैसा हूँ, वह आगे चल समझेंगे। अभी समझते जाते हैं। पूरा समझ लें तो बाकी क्या चाहिए!

Refer last page



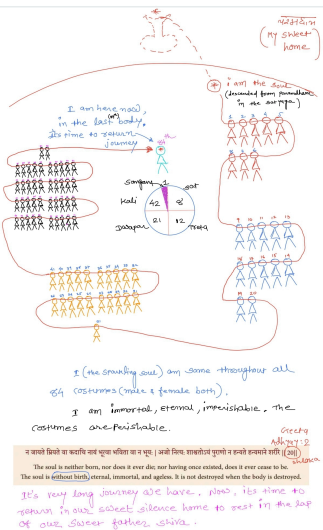
रहना भी अपने गृहस्थ में है परन्तु दुश्मन माया ऐसी है जो श्रीमत पर चलने से रोक लेती है। कहते हैं

बाबा माया के तूफान बहुत आते हैं। माया आपकी याद भुला देती है। हाँ पुरुषार्थ जोर से करते-करते फिर आखरीन माया भी थक जायेगी। माला भी 8 की है। मुख्य 8 रत्न हैं। 8 तो हैं - जोड़ी। नवाँ रत्न बीच में शिवबाबा को रखते हैं। कोई लाल बनाते हैं, कोई सफेद। अब शिवबाबा तो है बिन्दी। बिन्दी लाल नहीं होती। बिन्दी तो सफेद ही होती है। वह बहुत

Points: Gold = बाप, Red = रोज, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा

Point to be Noted

30-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



सूक्ष्म है। दिव्य दृष्टि के सिवाए कोई देख न सके। डॉक्टर आदि कितनी कोशिश करते हैं देखने की।

परन्तु देख न सकें क्योंकि अव्यक्त चीज़ है ना

इसलिए पूछा जाता है - तुम कहते हो हम आत्मा हैं,

अच्छा आत्मा को कब देखा है? अपने को ही नहीं

देख सकते तो बाप को कैसे देख सकेंगे। आत्मा को

जानना है कि कैसे उनमें पार्ट भरा हुआ है। यह

बिल्कुल ही कोई नहीं जानते। 84 के बदले 84

लाख कह देते हैं। बाप आकर बच्चों को भी सब बातें

समझाते हैं। आज का भारत क्या है, कल का भारत

क्या होगा! महाभारत लड़ाई भी है। गीता का ज्ञान

भी दिया है, यह रूद्र यज्ञ भी है। सब धर्मों का

विनाश, एक धर्म की स्थापना हो रही है।



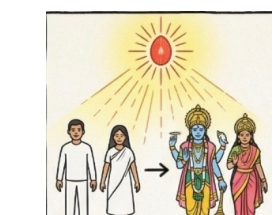
यह शिवबाबा का भण्डारा है, इससे तुमको पवित्र

भोजन मिलता है। ब्राह्मण-ब्राह्मणियाँ ही बनाते हैं,

इसलिए इनकी महिमा अपरमअपार है। इससे तुम

पवित्र बन पवित्र दुनिया का मालिक बनते हो,

इसलिए पवित्र भोजन अच्छा है। जितना तुम ऊंच

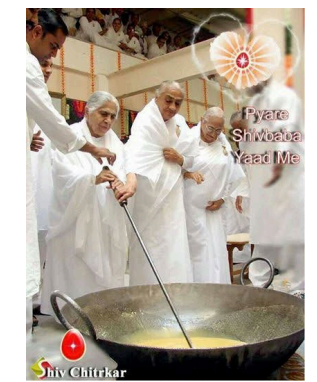
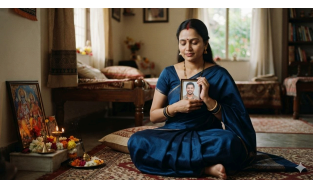
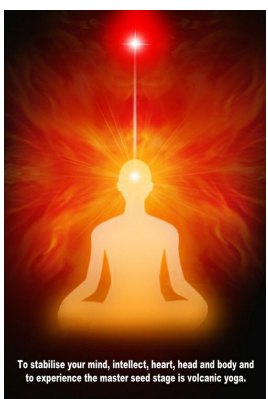
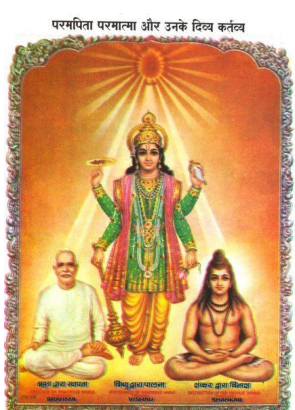
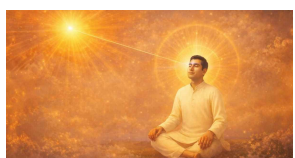
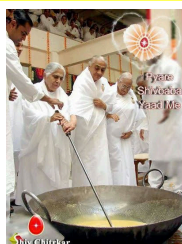


Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा

Point to be Noted

30-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

होते जायेंगे **उतना** भोजन भी शुद्ध तुमको मिलेगा। योगयुक्त कोई भोजन बनाये तो बल बहुत मिल जाए, वह भी आगे चल मिलेगा। सर्विसएबुल बच्चे जो सेन्टर पर रहते हैं, वह अपने ही हाथों से भोजन बनाकर खायें तो भी उसमें बहुत बल मिल सकता है। जैसे पतिव्रता स्त्री, पति के बिगर किसी को याद नहीं करती। ऐसे तुम बच्चे भी याद में रहकर बनाओ, खाओ तो बहुत बल मिलेगा। बाबा की याद में रहने से तुम विश्व की बादशाही लेते हो। बाबा राय तो देते हैं परन्तु अभी किसकी बुद्धि में नहीं आता। आगे चल हो सकता है - कहेंगे हम अपने हाथ से योगयुक्त हो भोजन बनाते हैं, तो सबका कल्याण हो जाए।



बाप बच्चों को हर प्रकार की मत देते हैं ना। त्रिमूर्ति चित्र सामने रखा हो। वर्सा शिवबाबा से लेना है। कुछ न कुछ युक्ति करते रहो। बाबा अपना मिसाल देते हैं - भक्ति मार्ग में हम नारायण के चित्र को बहुत प्यार करते थे। बस उनको याद करने से आंसू आ जाते थे क्योंकि उस समय वैराग्य था। छोटेपन में

Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा

30-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वृत्ति वैराग्य की थी। यह हैं फिर बेहद की बातें। फिर भी कहते हैं मनमनाभव। योग में रहने से ही तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेंगे। याद में रहने का फुरना रखना है। श्रीमत मिलती है, बाप कहते हैं याद करो। मैं सृष्टि का रचयिता हूँ तो तुम भी नई दुनिया के मालिक बनेंगे ना। नहीं तो सजा भी खायेंगे और पद भी भ्रष्ट हो जायेगा। मरने के पहले बच्चों को यह फुरना (फिक्र) रखना है कि हम सतोप्रधान कैसे बनें। बाप को याद तो जरूर करना है। यह है बड़े ते बड़ा फुरना। अच्छा!

positive worry



मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।



Points: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा



30-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन
धारणा के लिए मुख्य सार:-



1) योगयुक्त हो अपने हाथ से भोजन बनाना और खाना है। पवित्र दुनिया में जाने के लिए पवित्र भोजन खाना है। उसमें ही बल है। समझा?

Exchange



2) नया तन-मन-धन प्राप्त करने के लिए पुराना सब कुछ बाप पर वारी कर देना है। इस शरीर सहित बाप पर पूरा-पूरा कुर्बान जाना है।



Step: 1

Method/Process/Instrument

30-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- एकान्त और अन्तर्मुखता के अभ्यास द्वारा स्वयं को अनुभवों से सम्पन्न बनाने वाले मायाजीत भव

Step: 2

Outcome/Output/Result

Step: 3

Finale Achievement



नॉलेजफुल के साथ पावरफुल अर्थात् अनुभवी मूर्त बनने के लिए एकान्तवासी और अन्तर्मुखी बनो।

डगमग होने का कारण है अनुभव की कमी इसलिए सिर्फ समझने, समझाने वाले या मननमूर्त नहीं बनो, एकान्तवासी बन हर प्वाइंट के अनुभवी बनो

तो किसी भी प्रकार के धोखे से,

दुःख वा दुविधा से बच जायेंगे।

किसका बच्चा हूँ, क्या प्राप्ति है इस पहले पाठ का अनुभव कर लिया तो मायाजीत सहज ही हो जायेंगे।

स्लोगन: - जिम्मेवारी सम्भालते हुए डबल लाइट रहने वाले ही बाप के समीप रत्न हैं।

Definition of

Point: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, G

30-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति

ये अव्यक्त इशारे -



परोपकार की भावना से सम्पन्न बन

अपकारी पर भी उपकार करो

कहु कपि रावन पालित लंका। केहि बिधि दहेउ दुर्ग अति बंका॥
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना। बोला बचन बिगत अभिमाना॥3॥
भावार्थ
हे हनुमान! बताओ तो, रावण के द्वारा सुरक्षित लंका और उसके बड़े बौके किले को तुमने किस तरह जलाया? हनुमान जी ने प्रभु को प्रसन्न जाना और वे अभिमानरहित वचन बोले- ॥3॥



साखामग के बड़े मनुसाई। साखा तें साखा पर जाई॥
नाथि सिंधु हाटकपुर जारा। निसिचर गन बधि बिपिन उजारा॥4॥
भावार्थ
बंदर का बस, यही बड़ा पुरुषार्थ है कि वह एक डाल से दूसरी डाल पर चला जाता है। मैंने जो समुद्र लौंघकर सोने का नगर जलाया और राक्षसगण को मारकर अशोक वन को उजाड़ डाला, ॥4॥
सो सब तव प्रताप रघुसाई। नाथ न कछु मोरि प्रभुताई॥5॥
भावार्थ
यह सब तो हे श्री रघुनाथजी! आप ही का प्रताप है। हे नाथ! इसमें मेरी प्रभुता (बड़ाई) कुछ भी नहीं है॥5॥
ता कहुँ प्रभु कछु अगम नहि जा पर तुम्ह अनुकूल।
तव प्रभावेँ बड़वानलहि जारि सकइ खलु तुल॥33॥
भावार्थ
हे प्रभु! जिस पर आप प्रसन्न हों, उसके लिए कुछ भी कठिन नहीं है। आपके प्रभाव से रुई (जो स्वयं बहुत जल्दी जल जाने वाली वस्तु है) बड़वानल को निश्चय ही जला सकती है (अर्थात् असंभव भी संभव हो सकता है)॥33॥

अपने तीन स्वरूप सदा स्मृति में रखो:

एक उपकारी हूँ,

दूसरा निरहंकारी और

तीसरा अधिकारी हूँ।

कितना भी कोई अपकारी हो लेकिन आपकी दृष्टि और वृत्ति उपकारी हो, फिर जितना अधिकारी उतना निरहंकारी।

जब वृत्ति से भी मैं-पन का त्याग होगा, स्मृति में सदैव बाप और दादा रहेगा और मुख पर भी यही बोल रहेंगे

तब विश्वपति बन विश्व की सर्विस कर सकेंगे।



s: Golden = ज्ञान, Red = योग, Sky Blue = धारणा, Green = सेवा

If you wish to stay connected, Here is the link



BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009

Revise: 12/4/26

All वरदान slogans Sept 26

Click

All अव्यक्त इशारे Sept 26

Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place

Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

AV: 15/03/2010

Revise: 31/05/2026

Subtle Psychology

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है।

और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वतः ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है बाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026



अमृतवेला और साकार बापदादा के महावाक्य

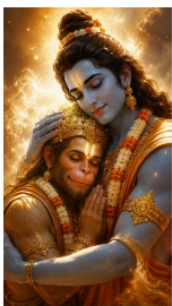
12.3.2. रात को सोने की विधि और उससे फायदा:



(अ) बाबा कहते हैं लक्ष्मी-नारायण के चित्र के सामने जाकर बैठो। रात को भी बैठ सकते हो। इन लक्ष्मी-नारायण को देखते-देखते सो जाओ। “अहो! बाबा हमें ऐसा बनाते हैं!” तुम ऐसा अभ्यास करके देखो कितना मजा आता है! फिर सुबह को अपना अनुभव सुनाओ।



(आ) कई बार कहा है — रात को जब सोते हो, तो आधा घण्टा बाप की याद में बैठ जाना चाहिए। कम से कम आधा घण्टा याद में बैठो, फिर सवेरे उठ कर याद करो तो अवस्था अच्छी रहेगी। रात को बाबा की याद में बैठने का नियम रखो तो बहुत अच्छा है। योग में रहने वालों को बाबा मदद भी देते हैं। आपे ही आँखें खुल जायेंगी। खटिया हिल जायेगी। बाबा बहुतों को उठाते हैं। रात को बाबा की याद में सोयेंगे तो सुबह को बाबा आकर खटिया हिलायेंगे। ऐसा भी बहुत अनुभव लिखते हैं। हिम्मत बच्चे मददे बाप तो है ही। अपने ऊपर अटेन्शन रखो। बेहद का बाप कितना रहम करते हैं! बाप की मदद अनुभव करने के लिए मोस्ट बिलवेड बाप को बड़े प्यार से याद करना है।



(इ) बच्चे, यह भी कायदा है जास्ती खाने वाले को जास्ती नींद आयेगी। याद में रहेंगे तो खुशी में खाना भी बहुत थोड़ा खायेंगे। नींद भी बच्चों को टाइम पर करनी चाहिए।



Understand the force of माया

Always be Alert 24X 7

Even Our single thought against श्रीमत can ruin our elevated stage.

इसी के चलते, श्रीमत के विपरीत कर्म का क्या प्रभाव हो सकता है ये हम अंदाज लगा सकते हैं।

जैसे रॉकेट पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से बाहर जब निकल रहा होता है तब एक सेकंड के लिए भी अगर ignition बंध हो जाए तो रॉकेट अपनी दिशा भटक कर गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव में आ जाएगा और blast कर जाएगा।

इसी प्रकार, माया का भी प्रभाव इससे भी अनेक गुणा अति अति अति शक्तिशाली है। जो हमारे एक संकल्प मात्र की गलती से हमारी स्थिति को zero पर लाने में देरी नहीं करती।

और उसमें भी अगर कोई श्रीमत के विपरीत कर्म किया तो स्थिति minus में भी चली जाती है। (जिसको मीठे बाबा कई बार रसातल में गिर जाना कहते हैं।) और फिर से चढ़ने के लिए और ही अति अति अति शक्तिशाली force चाहिए।

So Again, Be Alert Constantly.

Remember...!
We are at War 24X 7.

Sakar Bapdada:
यहाँ तुम स्टूडेंट बैठे हो। वहाँ बाहर मित्र-सम्बन्धियों आदि के पास जाने से स्टूडेंट लाइफ भूल जाती है। फिर मित्र सम्बन्धी याद आ जाते हैं। माया का फोर्स है ना।

SM: 26/9/26